भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए १८ जून से २४ जून २०२६ तक दूसरी साप्ताहिक सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा मिमी)				
		जून							जून				
		09	10	11	12	13	14	15	17	18	19	20	21
	हिसार	0	3	0	2.2	1.9	0	0	1.3	0.5	0.2	0.4	0.2
	जींद								1.4	1.8	0.1	0.2	0.2
	सिरसा				0.1	23.9			1.6	0.3	0.5	2.1	0.2
	रोहतक	0	0.4	0	2	10	0	0	1.5	0.6	0.4	0	0.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में फसल वानस्पतिक अवस्था से लेकर फूल-पाती की अवस्था में है। विरलन, निराई और हाथ से निराई की गई है। खेतों में मोठा, संथी और मकरा जैसे खरपतवार फैल गए हैं। थ्रिप्स, सफेद मक्खी और तेला की प्रारंभिक संख्या देखी गई, लेकिन आर्थिक हानि के सीमा स्तर से काफी नीचे है।

सिरसा में, फसल वानस्पतिक वृद्धि अवस्था में 27-57 दिन पुरानी है। जल्दी बोई गई फसल में अन्तराल भरना, पौधों का विरलन और पहली सिंचाई शुरू हो चुकी है, और हाथ से निराई/ट्रैक्टर-चालित कल्टीवेटर या बैल और ऊंट द्वारा अंतर-फसल कार्य जारी हैं। कुछ स्थानों पर खरपतवार उग आए हैं। जल्दी बोई गई कुछ जगहों पर तनाव पुष्पन देखा गया हैं। सभी सर्वेक्षण किए गए स्थानों पर रस चूसने वाले कीटों की संख्याआर्थिक सीमा स्तर से कम और नाममात्र की संख्या में दर्ज की गई है।

सलाह:

हिसार में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सात सप्ताह से अधिक पुरानी फसल में बारिश या पहली सिंचाई के बाद यूरिया की एक बोरी डालें और बारिश समाप्त होने के बाद उचित समय पर खुरपी या कसौला से हाथ से निराई करें। रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक सीमा स्तर से कम है, इसलिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता नहीं है। 35-40 दिन से अधिक पुरानी फसल में गुलाबी सुंडी कीटों की निगरानी के लिए 2 प्रति एकड़ की दर से गुलाबी सुंडी फेरोमोन जाल लगाएं और हर 3 दिन के अंतराल पर पतोंगों की संख्या दर्ज करें। यदि खेत में सूखे कपास के डंठल बचे हों तो उन्हें नष्ट कर दें। गुलाबी सुंडी संक्रमण की जांच के लिए कम से कम 100 फूलों की जांच करें। जड़ सड़न से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित पौधों को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से कार्बेंडाज़िम 50 डब्ल्यूपी या 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से ट्राइकोडर्मा विरिडी या टी. हारज़ियानम से भिगोएँ/सींचें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि फसल 35 दिन या उससे अधिक पुरानी हो गई है तो उसे सिंचाई दें ताकि गर्मी से होने वाले नुकसान से बचा जा सके। यदि फसल 35 दिन या उससे अधिक पुरानी हो गई है तो सिंचाई या बारिश के बाद यूरिया उर्वरक

की पहली विभाजितखुराक डालें। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए कुसाला/खुरपा से हाथ से निराई करें या ट्रैक्टर/बैल/ऊंट से चलने वाली त्रिफली से अंतर-फसल प्रक्रिया करें।टीएसवी के प्रकोप को कम करने के लिए खेतों और उसके आसपास के क्षेत्रों से पार्थेनियम खरपतवार को जड़ से उखाड़ फेंकें। वार्षिक घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% का 1,250 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें, या फसल की पंक्तियों के बीच खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए निर्देशित छिड़काव के रूप में 1,250 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर पैराक्वाट या 2,250 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर ग्लूफ़ोसिनेट अमोनियम का छिड़काव करें (सुरक्षात्मक हुड का उपयोग करते हुए)। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200-250 लीटर पानी का प्रयोग करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल लगाएं। गुलाबी सुंडी की गतिविधि की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप (2/एकड़) लगाएं और बुवाई के 35 दिन बाद नियमित अंतराल पर रोसेट फूल (गुलाव्वत फूल/सुंडी प्रभावित फुल) (100 फूल/एकड़) की निगरानी करें। फसल की बुवाई के 60 दिनों तक, यदि आर्थिक सीमा स्तर के ऊपर/आसपास चूसने वाले कीटों या सुंडी का प्रकोप दिखाई दे, तो केवल नीम का तेल या नीम आधारित कीटनाशक जैसे एज़ाडिराक्टिन 300 पीपीएम @ 1.0 लीटर/एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा मिमी)				
		जून							जून				
		09	10	11	12	13	14	15	17	18	19	20	21
	अजमेर	0	0	0	0	0.8	0	1.8	0.4	0.4	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0.6	0	0.5	0.4	0.5
	नागौर								0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	1.7	0.2	0.2	0	0.2
	श्रीगंगानगर	0	0	0	44.4	0	0	0.5	4.3	1.4	5.6	3.6	0.8
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में फसल छोटा पौधा/वनस्पति अवस्था (33 से 49 दिन कि) में है। कुछ स्थानों पर बुवाई के बाद सिंचाई की जा चुकी है; निराई-गुड़ाई और अंतर-फसल क्रियाएं जारी हैं। इट्सिट (ट्रायन्थेमा एसपीपी.), तांडला (डिगेरा आर्वेन्सिस) और मोथा (साइपरस रोटंडस) जैसे खरपतवारों ने फसल को प्रभावित किया है। रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप देखा गया, लेकिन यह आर्थिक सीमा स्तर स्तर (ईटीएल) से कम है।

सलाह:

किसानों को सलाह दी जाती है कि उर्वरकों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए पहली सिंचाई के बाद नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा डालें। सिंचाई से पहले नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का छिड़काव न करें, क्योंकि इससे उर्वरकों का रिसाव हो सकता है। कपास के खेतों में और उसके आसपास से खरपतवार हटा दें। परागण द्वारा फैलने वाले टीएसवी संक्रमण को कम करने के लिए खेतों के आसपास उगने वाले पार्थेनियम खरपतवारों को जड़ से उखाड़ दें। फसलों में कीटों और रोगों की नियमित निगरानी करें। सफेद मक्खियों की संख्या पर नज़र रखने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल लगाएं। रस चूसने वाले कीटों और गुलाबी

सुंडी को नियंत्रित करने के लिए 5 मिली/लीटर पानी में नीम आधारित कीटनाशक का छिड़काव करें। गुलाबी सुंडी पतंगों की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 फेरोमोन जाल प्रति हेक्टेयर (2 प्रति एकड़) लगाएं।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा मिमी)				
		जून							जून				
		09	10	11	12	13	14	15	17	18	19	20	21
	खरगाँव								0.6	0.8	0.4	0	0
	धार	0	0	0	0	0	0	0	0.7	1.2	0.6	0	0
	खांडवा								1	1.4	0.7	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में खेत तैयार करने का काम चल रहा है।

.

सलाह:

कपास की फसल की बुवाई समय से पहले न करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे केवल जल्दी से मध्यम समय में आने वाली गैर-बीटी किस्मों/बीटी संकरों की ही खेती करें। उन खेतों में कपास की खेती न करें जहां पिछले वर्ष यही फसल बोई गई थी।

फसल कटाई के बाद और बुवाई से पहले की कार्यविधियों का पैकेज

1. पिछली फसल के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खिले हुए कपास के गुलर (डोडों) को खेतों से साफ करें। उखाड़े गए कपास के डंठलों को खेत की मेड़ों पर ढेर न लगाएं। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी सुंडी के इल्ली संक्रमित गुलर जैसे फसल अवशेषों में शीतनिद्रा में चले जाते हैं। इसलिए, गुलाबी सुंडीके जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए। अवशेषों को नष्ट करने से नए मौसम की कपास की फसल में जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और कवक पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों के संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।

2. बाज़ार यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर में कम से कम 10 फेरोमोन ट्रैप लगाएं, प्रत्येक ट्रैप 20 मीटर की दूरी पर होना चाहिए। ये ट्रैप फसल के बाद निकलने वाले पतोंगों या यदि कोई कीट गलती से निकल आते हैं, तो उन्हें पकड़ने में सहायक होंगे। फेरोमोन ट्रैप में मौजूद लूर को समय-समय पर बदलते रहें। साथ ही, क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले इल्लियों को भी नष्ट कर दें। इससे जिनिंग या बाज़ार यार्ड परिसर से आसपास के खेतों में गुलाबीसुंडी के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।

3. मानसून से पहले कपास की बुवाई से बचें। जल्दी बोई गई फसलों में फूल और फली जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी विकसित हो जाती हैं। पिछली ऋतु की सुप्त आबादी से निकलने वाले गुलाबी सुंडी कीट इन फूलों और फलियों पर अंडे देते हैं, जिससे जल्दी बोई

गई फसलें नई ऋतु में गुलाबी सुंडी की पहली पीढ़ी के विकास में सहायक होती हैं। यदि समय रहते नियंत्रण न किया जाए, तो फूल और फलियों के विकास के साथ ही इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल पर फैल जाती हैं।

4. गर्मियों में गहरी जुताई करने से अप्रैल-मई में सूरज की तेज़ गर्मी और पक्षियों द्वारा खाए जाने के कारण मिट्टी में छिपे हुए सुप्त इल्ली और प्यूपा बाहर आ जाते हैं और मर जाते हैं। साथ ही, जुताई किए गए खेतों के आसपास उड़ने वाले पक्षी भी इन कीटों के जीवन चरणों को खा जाते हैं। इससे आने वाली फसल में गुलाबीसुंडी, पत्ती खाने वाली इल्लियाँ और मिट्टी से फैलने वाली बीमारियाँ जैसे मुरझाना, जड़ सड़न और नेमाटोड के प्रकोप को कम करने में मदद मिलती है।

5. पिछली फसल के दौरान जिन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक था, उनमें फसल चक्र अपनाना चाहिए ताकि गुलाबी सुंडी का जीवन चक्र टूट सके। कपास ही गुलाबी सुंडी का एकमात्र मेजबान पौधा है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में सहायक होता है। फसल चक्र रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और नेमाटोड के संक्रमण को रोकने में भी कारगर है।

6. कपास की ऐसी किस्में उगाएँ जो रस चूसने वाले कीटों और रोगों के प्रति सहनशील हों, कम समय में तैयार हो जाएँ और जल्दी पक जाएँ। इससे फसल की शुरुआती वृद्धि अवस्था में रस चूसने वाले कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अनावश्यक छिड़काव से बचा जा सकता है। गुलाबी सुंडी का प्रकोप मध्य मौसम से शुरू होता है और देर से मौसम की ओर लगातार बढ़ता जाता है। इसलिए, कम समय में तैयार होने वाली और जल्दी पकने वाली किस्में देर से मौसम में गुलाबी सुंडी के प्रकोप से बचने में सहायक होती हैं।

7. कपास की बुवाई जून में, मानसून की 80-100 मिमी बारिश होने के बाद ही करनी चाहिए। अंकुरण और फसल की अच्छी वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए, साथ ही प्रारंभिक अंकुरण अवस्था के दौरान लंबे समय तक सूखे की स्थिति से निपटने के लिए, मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। इससे लंबे समय तक बारिश न होने के कारण दोबारा बुवाई से भी बचा जा सकता है। जून में समय पर बुवाई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती प्रकोप से भी बचा जा सकता है।

8. कपास किसानों में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। इनपुट डीलरों को भी किसानों को मानसून से पहले बुवाई न करने की सलाह देने के लिए कहा जा सकता है। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट

)https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:
Dr. Vijay N. Waghmare
Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal
Editing Team:

Dr. G. T. Behere	Dr. A. S. Tayade	Dr. A. H. Prakash	Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande	Dr. Shivaj Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:

Hindi	: Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani, Dr Shashi Kumar